ISSN No. 2231-6329
(UGC-CARE Listed Group-I)

''मानव त्रासदी और वैज्ञानिक प्रगति पर प्रश्न चिन्ह'' ''एटम बम'' कहानी विशेष सन्दर्भ में

अनिता जाट
शोध छात्रा (पी.एचडी.), ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय जयपुर (राज.)

डॉ चित्रा
(असिस्टेट प्रोफेसर), शोध पर्यवेक्षक, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय जयपुर (राज.)

प्रस्तावना

आधुनिक युग में वैज्ञानिक प्रगति शिखर पर है। जो मानव को अनेक सुविधाये व उसके हर कार्य को सुगम बनाने का अथक प्रयास किया जा रहा है। अपने को शक्तिशाली दिखाने और दूसरों पर शासन करने के लिए सृष्टि विनाशकारी आविष्कार किये जा रहे है ये आविष्कार मानवता के रक्षण हेतु कम अपने शक्ति प्रदर्शन हेतु अधिक दिखाई देते है। जो मनुष्य की सनक और अपने को बुद्धिमान कहलाने वाले वृद्धिवर्ग पर प्रश्न चिन्ह लगा देता है। एटम बम कहानी मानव के परमाणु आविष्कार का ध्वसं झेल चुके हिरोसीमा व नागाशाकी की त्रासदी को व्यक्त करता है। दो अंहकारी नेतृत्व का परिणाम आवाम को झेलना पडता है जो उचित नही अंहकार के इस प्रदर्शन में पीडा आमजन को भुगतना पड़े यह न्यायोचित नहीं। विज्ञान आविष्कार संसार को नया रूप देने के लिए हो तो उचित लगता है लेकिन इस निर्माण में ध्वंस के बीज भी व्याप्त है जो हम भूल चुके है और मानव ही अपने विनाश को जन्म दे रहा है। इस कहानी में विज्ञान युद्ध और शान्ति की त्रिवेणी पर आधारित मानवता के परिप्रेक्ष्य में समझने परखने की कहानी है। आज विश्व का प्रत्येक मानव विज्ञान की उपलब्धियों को आंशका की दृष्टि से देखने लगा जो न जाने कब उसकी फूल सी जिन्दगी को श्मशान बना दे। उसका यह चिन्तन अपेक्षित है। क्योंकि मानव बुद्धि ही सदैव विनाश का कारण रही है। विश्व को ऐसे आविष्कार कम से कम करने चाहिये जिससे मानव कल्याण कम और विनाश का काल समाया हुआ हो।

कोबायाशी मानवता का प्रतीक व वैज्ञानिक प्रगति पर प्रश्न चिन्ह - कोबायाशी एक सामान्य जीवन जीने वाला पात्र जिसने जीवन में संघर्ष किया अपनो को खोकर स्वयं को कर्तव्य निष्ठ बनाकर जीवन व्यतीत करता है। उसे अपने नेताओं के अंहकार का शिकार होना पडता है बल्कि पुरा हिरोशिमा व नागाशाकी अपने प्रजापालन करने वाले राजा के अंहम का भोगी बनता है जो उचित नही या अगर एक नेता के सूख जाने से लाखो जाने बच जाये तो ऐसा क्यो नही किया जाये। विध्वंश की इस लीला में स्वयं का जीवन बच जाना ईश्वर के प्रति कृतयज्ञता प्रकट करना आस्था का संकेत है जो शायद बुद्धिवर्ग कहे जाने वाले मानव में अहंकार ने समाप्त कर दिया हो। परमाणु धमाके के बाद चारो तरफ फैला जहरीला धुआँ रोम-रोम में हजारों सुईयां चुभने का अहसास इतना तेज प्रकाश की वहां मौजूद सभी मनुष्य लम्बी-लम्बी छायाओं मे बदल गये। दिवारों पर उन लोगो की काली छाईयाँ छप गई जो दिवारों के पास खडे थे। जो जिन्दा बचे वे जीवित लाश बन चुके थे। सब शून्य, रेडियों एक्टीव पदार्थ वायु में फैल चुका था जिससे हवा के साथ सैकडों सूईयों की चुभन की पीडा देता था क्या यह आविष्कार था। मानव कल्याण हेतु

ISSN No. 2231-6329
(UGC-CARE Listed Group-I)

क्या इसी विनाश के लिये वे अपने को बुद्धिमता कहते है। क्या अंहकार ने उनमें बुद्धि व मानव कल्याण हितो के प्रति अनदेखा बना दिया है। मुझे क्यो मारा ? मुझे क्यो मारा ? क्या इस प्रश्न का उत्तर है इनके पास यह प्रश्न नही विज्ञान की प्रगति पर प्रश्न चिन्ह है। जिसने जीवित प्राणी को क्षण भर में एक धुएँ में बदल दिया भावी अनेक पीढियों को अपाहिज पैदा होने को विवश कर दिया। क्या उसका दोष मानवता पर विश्वास करना या अपने राजाओं को अपना भाग्यविधाता मानना। यह दंश हिरोशिमा या नागाशाकी ने ही नही भोपाल ने भी झेला है जिससे आज तक उस दंश को झेलने वाले परिवारों व मनुष्यों की पीढियां भोग रही हैं भोपाल गैस त्रासदी भी विज्ञान की प्रगति का एक उदाहरण है जिसने इस ध्वंस को जन्म दिया, यह भूंमि बंजर बन गई। बच्चे आज तक अपाहिज ही पैदा होते है। शूकुन से साये हुये जनो को इस प्रगति ने चुपके से मौत का आंलिगन करा दिया। विज्ञान ने मानव जीवनचर्या को सरल आरामदायी बनाया परन्तु विनाश भी किया है स्वयं को शक्तिशाली बनाने के स्वप्न ने विनाश का निर्माण कर लिया और आज हम तर्क देते है। विज्ञान प्रगति का एटम बम के पात्र का इस त्रासदी के साक्ष्य है जो हम पर व्यंग्य करते है हमारी प्रगति पर व्यंग्य करते है मानवता पर सवाल खड़ा करते है। मरीजों का चिल्लाना गौरा दुश्मन, खुदा दुश्मन, बादशाह भी दुश्मन, अनास्था को जन्म देने वाला है। इन सब में खुले आसमान के नीचे खड़े होने के बावजूद स्वयं का बच जाना ईश्वर के होने का संकेत है बार - बार धरा को स्पर्श कर अपने जीवित होने का प्रमाण देना अपने को इस ध्वंश में जीवित बचाये रखने की चेष्ठा करना मनुष्य के कर्मठ और जीने की लालसा को दिखाता हैं। मृत्यु और जीवन के बीच आज जंग चल रही थी प्राण एक बूंद पानी के लिये देह छोडने की धमकी दे रहे थे। और अंगूलियां से आसुओं की एक बूंद से गला तर करने का संघर्ष जीवन का मृत्यु को पराजय करने का प्रयास था। जो विपरीत परिस्थितियों में भी जीवन मोह को दर्शाता है। सुजुकी का यह कथन विनाश लोलुप स्वार्थी मनुष्य शक्ति के प्रयोग भी नष्ट करने के ही कर रहा है। तो फिर निर्माण का दूसरा जरिया बचा ही क्या रहा है अब। जो विज्ञान के नित नये आविष्कारों जिनमें विनाश का बीज निहित है उन पर प्रश्न चिन्ह लगाता है। जब इन हथियारों से विनाश होना निश्चित है तो इनका निर्माण ही क्यों किया जा रहा है। सुजुकी का इस घटना से से किकर्तृव्य विमुडित सा हो जाना जड़ सा बन जाना हिरोशिमा के इस विनाश गहरा असर हुआ वे हिम्मत हार चुके थे। नींद आराम, भूख सब जैसे समाप्त हो गये हो मरीजो के इस शोर ने उनकी पीडा ने उन्हे थका सा दिया और कुछ न कर पाने की अपनी स्थिति ने उनमें तत्कालिन जिम्मेदारी के प्रति एक आक्रोश को जन्म दिया और साथ ही दुश्मनो पर बदला ही लेना था तो इन नेताओ से लेते निर्दोष जनता के प्राण लेना क्या क्रूरता नही क्या वे भी पशु है। जो पशुता पर उतर आये। इसी अनायाश घटना ने हर शक्स अन्दर से हिला दिया डर व्याप्त कर दिया। जब व्यक्ति प्रस्तुत परिस्थितियों को दूर करने में असक्षम सा हो जाता है तो वह अनास्था की और अग्रसर होने लगता है मानवता पर विश्वास नही रहा फेक दो इन जिन्दा लाशो को हिरोशिमा की वीरान धरती पर या इन्हे जहर दे दो अब अस्पताल और डॉक्टरो की कोई आवश्यकता नही बची ये वाक्य इस घटना के प्रभाव से उत्पन्न मानसिकता के द्वन्द्व को बता देते है। क्या हम अपने विनाश का भविष्य तैयार नही कर रहे। क्या इसके उत्तरदायी हमारी कभी पूरी न होने वाली इच्छाऐ नही।

एटम बम की पात्र नर्स मानवता व कर्तव्य की संरक्षण - विध्वंश चाहे कितना ही बडा क्यो न हो मानवता व अपने कर्तव्यों का सरंक्षण आवश्यक है। विपरीत परिस्थितियां ही इन्सान के धैर्य और कर्तव्यों का परीक्षण किया करती है।

ISSN No. 2231-6329
(UGC-CARE Listed Group-I)

जो अनुकूल परिस्थितियों में हमे पहचानने का अवसर नही देती। हमें कितनी दृढ़ता है कितनी मानवता कल्याण शेष है इन्ही परिस्थितियों में परख लिया जाता है। विपरीत परिस्थितियों में उनको कौसने से अच्छा समय के अनुकूल परिस्थितियों को बनाने की कोशिश ही हमे अपने कर्तव्य के प्रति सजग रखती है। नर्स का यह कहना यह समय इन बातों का नही डॉक्टर हमें जिन्दगीयों को बचाना है ये हमारा पेशा है फर्ज है एटम की शक्ति से हारकर हम इन्सानियत को मरने नही दे सकते। जो हर विकट परिस्थिति में अपने फर्ज को निभाने की सीख देता है क्योंकि कोई भी शक्ति मानवता से या मानव शक्ति से बडी नहीं हो सकती। अंहकार चाहे कितना ही बलशाली क्यों न हुआ हो वह मानव हौसलो व कर्तव्यों से उसे कुछ समय के डिगा सकता है लेकिन समाप्त नही कर सकता यह भी सत्य है जो अटल है। युद्ध क्षेत्र हो या कोई भोपाल या एटम की त्रासदी धैर्य ने इसको हराया है। संयम धैर्य ने हर विरोध का प्रतिकार किया है। मानवता ने नफरत के अंश को समाप्त किया है। आवश्यक है। कर्तव्य विमुडित व्यक्ति न स्वयं का हित कर सकता हैं न समाज का कल्याण कर सकता है। आधुनिक युग जिसने स्वयं को स्वर्णिम बनाने के लिये जो विनाश की सामग्री इक्कठी कर ली है आवश्यकता है उसके निर्माण पर रोक लगाने कि जो मानव कल्याण के हित में उसे सजृित करने का लाभ नही उसकी समाप्ति का प्रयास ही मानवता को बचा सकता है कर्तव्य विमुख होने से रोक सकता है।

निष्कर्ष - इस शोध पत्र में हमने विकास व प्रगति के नाम जो कुकृत्य किया जा रहा है उस पर प्रकाश डालना रहा एटम बम कहानी इस कुकृत्य का साक्ष्य रहा। कोबायासी जो नायक है उसकी वेदना ने उसकी जीने की चाह ने हमे इस विनाश के परिणामों की और अधिक स्पष्ट कर देता है। विज्ञान चाहे कितना ही प्रगति करे लेकिन अगर उसमें विनाश छुपा है तो उसका समाप्त हो जाना बेहतर है। भोपाल गैस त्रासदी हो या हिरोशिमा या नागाशाकी कोई और शहर एटम बम की नवीन कहानी बने ऐसा हमें होने से रोकना है। यह एक राष्ट्र नही बल्कि उन सभी राष्ट्रो के सहयोग से होगा जो परमाणु परीक्षण करना अपनी शक्ति का प्रतीक है जो मानव कल्याण की दुहाई देते है अगर इस में मानव कल्याण ही निहीत है तो भोपाल त्रासदी का दंश आज तक पिढीयां क्यो भोग रही है क्यो हिरोशिमा नागाशाकी के बच्चे सामान्य बच्चों की तरह पैदा नही हो रहे। क्या हमारा दायित्व नही संसार को शान्तिमय व सुखमय बनाये रखने का अगर मानव ही न रहा तो इस अंहकारी का अंहकार कौन देखेगा। सभी राष्ट्रो को अपने स्वार्थो से ऊपर उठकर सम्पूर्ण सृष्टि का कल्याण सोचना होगा। जिसकी वर्तमान समय बढते इस परमाणु शक्ति के बीच आवश्यक है। इसे सभी के सहयोग से पूरा किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. कथा धारा पुस्तक (एटम बम कहानी) - अमृत नागर
2. एटम बम कहानी - पृष्ठ संख्या -१
3. कथा धारा पुस्तक (एटम बम) - पृष्ठ संख्या ४४
4. कथा धारा पुस्तक (एटम बम) - पृष्ठ संख्या ४५
5. कथा धारा पुस्तक (एटम बम) - पृष्ठ संख्या ४६
6. कथा धारा पुस्तक (एटम बम) - पृष्ठ संख्या ४७

ISSN No. 2231-6329
(UGC-CARE Listed Group-I)

7. कथा धारा पुस्तक (एटम बम) - पृष्ठ संख्या ४८
8. कथा धारा पुस्तक (एटम बम) - पृष्ठ संख्या ४६
9. कथा धारा पुस्तक (एटम बम) - पृष्ठ संख्या ४६
10.भोपाल गेस त्रासदी - गूगल